टॉयलेट सोप अपनी त्वचा के अनुसार करें चयन

साबुन बनाने की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण घटक वसीय अम्ल होता है और वसीय अम्ल का मुख्य स्रोत नारियल जैतून या ताड़ के पेड़ होते हैं। वसीय अम्ल का सोडियम नमक जब उबले हुए प्रारूप में परिवर्तित हो जाता है तो वह एकदम से ही एक स्वस्थ व स्वच्छ टॉयलेट सोप के रूप में होता है। यह सिर्फ़ आपके शरीर से मैल ही नहीं हटाने का दवा करता बल्कि आपको कीटाणुओं से भी मुक्त रखने का दावा करता है। इसकी खुशबू आपको तरोताजा रखने के साथ–साथ एकदम साफ़ होने का भी एहसास कराती है और ताज़गी के लिए हम रोजाना स्नान करते हैं। लेकिन अगर साबुन का चयन गलत हो जाए तो कई बार हमारी त्वचा को तकलीफ भी होने लगती है जैसे त्वचा में रूखापन आना आदि। अपने साबुन का चयन कैसे करें, जानिए कंस्यूमर वॉयस की इस रिपोर्ट में–

साबुन का पहला प्रमाण यानि अब तो इसमें बहुत से बदलाव आ गए लेकिन यह नहाने का साबुन प्राचीन काल में 2800 सदी में बेबीलोन के समय में ईजाद हुआ। साबुन एक उत्पाद के रूप में इंग्लैंड में 12 वीं सदी के अंत में होना शुरू हुआ था। चुंकि भारी टैक्स के कारण 1853 तक साबुन एक बहुत महंगा उत्पाद होता था। इसके बाद साबुन पर से टैक्स निरस्त कर दिया गया उसके बाद 19वी सदी में नहाने का साबुन पूरे युरोप और ब्रिटिश के सभी शहरों में सर्वाधिक इस्तेमाल किया जाने लगा।

आज, भारत में 700 से भी अधिक पंजिकृत साबुन की कंपनियां चल रही हैं जो कि ठोस व तरल दोनों रूप में नहाने का साबुन बनाती हैं और जिनकी वार्षिक कमाई

1,700 करोड़ रुपये है। ऑनलाइन साइट्स पर कई शोध बताते हैं कि भारत में वर्ष 2004 से 2009 के बीच सबसे अधिक नहाने के साबुन का बाज़ार बढ़ा, विकास दर 9 से 12 फीसदी तक पहुंच गई। वर्ष 2009 में भारत में साबुन के बाज़ार में बार सोप उत्पाद ही सर्वाधिक बिकता था। लगभग 99 फ़ीसदी सिर्फ बार सोप का ही बाज़ार था।

साबुन की इसी प्रसिद्धि और वर्चस्व के कारण हमने तय किया कि 'टॉयलेट साबुन' का परीक्षण किया जाए। आपके साबुन कितने भारतीय मानक के अनुकूल हैं, जो उन्होंने दावे किए है। उन पर कितने खरे उतरते है आदि के बारे में परखा गया।

'कंस्यूमर वॉयस' के शोध समूह ने अलग–अलग ग्रेड (बॉक्स में ग्रेड देखें) के नहाने वाले साबुन के 12 ब्रांड भारत के अलग–अलग शहरों में प्रचलित खुदरा बाज़ारों से खरीदे और सभी ब्रांड परीक्षण के लिए एनएबीएल प्रमाणित प्रयोगशाला में भेज दिए। यह जांच भारतीय मानक IS:2888:2004 के अनुसार की गई। हमने क्लीनिकल शोध संगठन द्वारा नहाने के साबुन की संवेदी जांच भी कराई। इसके मापदंड भारतीय मानक में नहीं दिए गए थे। संवेदी जांच के मापदंड तो हाथ धोने के साबुन की खरीददारी आदि बिंदुओं के आधार पर बनाए गए।

साबुन क्या है?

साबुन बसा अम्लों के जलविलेय लवण हैं। वसा अम्लों के ग्लिसराइड प्रकृति में तेल और वसा के रूप में पाए जाते हैं। इन ग्लिसराइडों से ही दाहक सोडा के साथ द्विक अपघटन से संसार का अधिकांश साबुन तैयार होता है, साबुन वास्तविक रूप में लवण है। अधिकांश साबुन एक तेल से नहीं बनते, यद्यपि कुछ तेल ऐसे हैं जिनसे साबुन बन सकता है। अच्छे साबुन के लिए कई तेलों अथवा तेलों और चरबी को मिलाकर इस्तेमाल करते हैं।

भिन्न–भिन्न कामों के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के साबुन बनते हैं। धुलाई के लिए साबुन सस्ता होना चाहिए। यदि नहाने का साबुन बनाना है, तो सूखे साबुन को काटकर आवश्यक रंग और सुगंधित द्रव्य मिलाकर पीसते हैं, फिर उसे प्रेस में दबाकर छड़ बनाते और छोटा–छोटा काटकर उसको मुद्रांकित करते हैं। पारदर्शक साबुन बनाने में साबुन को एल्कोहॉल में घुलाकर तब टिकिया बनाते हैं।

टॉयलेट सोप और नहाने का साबुन

बीआइएस के अनुसार, बाज़ार में दो प्रकार के साबुन उपलब्ध हैं– हाथ धोने वाला साबुन और नहाने वाला साबुन। साबुन की मूलतः गुणवत्ता उसके कुल वसा (टोटल फैटी मैटर/टीएफएम) पर निर्भर करती है, जो कि साबुन के साबुन होने का एहसास कराता है।

साबुन में यह टीएफएम और अघुलनशील पदार्थ ही उसके हाथ धोने के साबुन और नहाने के साबुन का मुख्य अंतर स्पष्ट करते हैं। नहाने के साबुन में फैटी उत्पादों का इस्तेमाल होता है, इनमें 60 से 80 फ़ीसदी तक टीएफएम की मात्रा पाई जाती है और वहीं नहाने के साबुन में कम से कम ही टीएफएम की मात्रा 40 फ़ीसदी तक होती है।

नहाने के साबुन को कई प्रकार के जरूरी पदार्थों से बनाया जाता है। परफ्यूम और आर्द्रक के साथ–साथ अन्य घटकों जैसे– रंग, ऑक्सीकरणरोधी पदार्थ, त्वचा के लिए लाभकारी पदार्थ, अनुमानित रोगाणुनाशक, चिकनापन की मात्रा, उपभोक्ताओं के लिए लाभकारी अन्य मिश्रण आदि। इन सभी के लिए उत्पादक ने अपने ब्रांड के पैकिंग पर दावा किया।

		ग्रेड 1						
ब्रांड→	भारांक %	मैसूर सैंडल	सिंथॉल	सुपिरिया सिल्क	गोदरेज़ फेयर ग्लो	पार्क एवेन्यू	गोदरेज़ नं. 1	
खुदरा मूल्य(रुपए)/भार(ग्राम)		30/75	32/100	16/100	21/100	40/125	20/100	
लागत प्रति 10 ग्राम (रुपए)		4	3.2	1.6	2.1	3.2	2.0	

कीमत में किफ़ायती, लेकिन वज़न मिला 8 फीसदी कम

सुपिरिया सिल्क (ग्रेड1)

- 100 ग्राम के साबुन की कीमत 16 रुपये, सुपिरिया सिल्क ग्रेड1 का साबुन है जो कि हमारे द्वारा जांचे गए सभी ग्रेड2 व ग्रेड3 वाले साबुन से भी सस्ता है।
- ग्रेड1 के ब्रांड में इस साबुन को तीसरी रैंक मिली।
- कुल वज़न 91.98 ग्राम मिला जबकि दावा किया गया था 100 ग्राम का।
- ग्रेड2 श्रेणी में विवेल कीमत में किफायती के साथ–साथ कार्यनिष्पादन में भी बेहतर रहा।

कंस्यूमर वॉयस इन्हें खरीदने के लिए सहमति जताता है

ग्रेड 1	ग्रेड 2	ग्रेड 3
मैसूर सैंडल	विवेल	हमाम

संवेदी जांच में ये रहे अव्वल

ग्रेड 1	ग्रेड 2	ग्रेड 3
सिंथॉल	मार्गो	हमाम

ग्रेड की श्रेणी

भारतीय मानक के अनुसार टॉयलेट सोप को निम्न तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है।

ग्रेड 1

यह हाईग्रेड साबुन होता है जो कि माइल्ड रूप में या फिर एकरूपता में होता है। यह रंगीन या फिर सफ़ेद भी होता है। परफ्यूम व अन्य सुगंध के पदार्थों का भी प्रयोग किया जाता है। यह एकदम कोमल और हाथों को स्वच्छता से साफ करता है और इस्तेमाल करने पर झाग भी ज़्यादा बनते हैं।

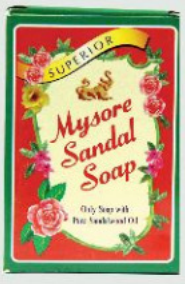

ग्रेड 1 साबुन में टीएफएम 76 फ़ीसदी से अधिक होना चाहिए।

	ग्रेड 2			ग्रेड 3		
	विवेल	मार्गो	लक्स	हमाम	लाइफबॉय	मेडिमिक्स
	22/100	20/100	19/100	22/100	21/125	29/125
	2.2	2.0	1.9	2.2	1.68	2.32

हाथ धोने का साबुन

ग्रेड 2

इस साबुन की कोमल और मजबूत संरचना होती है। यह रंगीन या फिर सफ़ेद भी होता है। परफ्यूम व अन्य सुगंध के पदार्थों का भी प्रयोग किया जाता है। यह एकदम कोमल और हाथों को स्वच्छता से साफ़ करता है और इस्तेमाल करने पर झाग भी बनते हैं।

ग्रेड 2 साबुन में टीएफएम 70 फ़ीसदी से अधिक होना चाहिए।

ग्रेड 3

इस साबुन की कोमल और मजबूत संरचना होती है। यह रंगीन या फिर सफ़ेद भी हो सकता है, लेकिन अमूमन लाल रंग का होता है क्योंकि इसमें क्रिसलिक अम्ल का इस्तेमाल होता है। यह एकदम कोमल और हाथों को स्वच्छता से साफ़ करता है और इस्तेमाल करने पर झाग भी बनते हैं।

ग्रेड 3 साबुन में टीएफएम 60 फ़ीसदी से अधिक होना चाहिए।

जांच किए गए ब्रांड :

	रैंक	कुल अंक 100 में से	ब्रांड	उत्पादक / द्वारा बेचा गया	एमआरपी कीमत
ग्रेड 1	1	87	मैसूर सैंडल	कर्नाटक सोप एंड डिटर्जेंट	30
	2	83	सिंथॉल	गोदरेज़ कंस्यूमर प्रोडक्ट	32 (4 साबुन का पैक 121 रुपये का)
	3	82	सुपिरिया सिल्क	आइटीसी	16 (4 साबुन का पैक 64 रुपये का)
	4	78	गोदरेज फेयर ग्लो	गोदरेज़ कंस्यूमर प्रोडक्ट	27 (3 साबुन का पैक 63 रुपये का)
	5	77	गोदरेज़ नंबर1	गोदरेज़ कंस्यूमर प्रोडक्ट	20 (4 साबुन का पैक 60 रुपये का)
	5	77	पार्क एवेन्यू	फॉरेवर बॉडी केयर इंडस्ट्रीज़	40
ग्रेड 2	1	84	विवेल	आइटीसी	22 (4 साबुन का पैक 70 रुपये का)
	2	82	मार्गो	ज्योथी कंस्यूमर प्रोडक्ट	22(4 साबुन का पैक 40 रुपये का)
	2	82	लक्स	हिंदुस्तान यूनीलिवर	18.75(4 साबुन का पैक 75 रुपये का)
ग्रेड 3	1	82	हमाम	हिंदुस्तान यूनीलिवर	22
	2	80	लाइफबॉय	हिंदुस्तान यूनीलिवर	20.5 (4 साबुन का पैक 82 रुपये का)
	3	76	मेडिमिक्स	चोलाएल	27(3 साबुन का पैक 81 रुपये का)

स्कोर रेटिंग : > 90% बहुत अच्छा*****, 71–90% अच्छा****, 51–70% औसत***, 31–50% खराब**, 30% से कम : बहुत खराब*

जांच के मुख्य परिणाम

ग्रेड1 के नहाने के साबुन की श्रेणी में मैसूर सैंडल इसके बाद सिंथॉल में अधिकतम मात्रा में कुल वसा (टीएफएम) पाया गया। ग्रेड2 व ग्रेड3 की श्रेणी में विवेल और हमाम में टीएफएम की मात्रा सबसे अधिक पाई गई। हालांकि अन्य सभी ब्रांड मानक द्वारा निर्धारित टीएफएम मात्रा के अनुकूल ही पाए गए।

अधिकतर ब्रांड के साबुन के इस्तेमाल के बाद हाथों की त्वचा सूखी ही पाई गई। सिर्फ़ सुपिरिया सिल्क, सिंथॉल और लक्स साबुन के इस्तेमाल के बाद त्वचा कुछ मुलायम रही।

संवेदी जांच में सभी ब्रांड ने एक जैसे अच्छे परिणाम दिए, विशेषज्ञों व वालेंटियर्स द्वारा सभी संतुष्ट करने वाले थे।

हमाम और सुपिरिया सिल्क में दावा किए गए वज़न से कम पाया गया।

परीक्षण के परिणाम

- *कुल वसा/टीएफएम (फ़ीसदी बाय मास)*

साबुन की गुणवत्ता के लिए सबसे महत्वपूर्ण टोटल फैटी मैटर यानि टीएफएम मायने रखता है। जितनी अधिक टीएफएम की मात्रा होगी साबुन की गुणवत्ता उतनी अच्छी

होगी। बीआईएस के अनुसार ग्रेड1 के साबुन में 76 प्रतिशत से अधिक टीएफएम, वहीं ग्रेड2 व ग्रेड3 के साबुन के लिए 70 व 60 प्रतिशत से अधिक टीएफएम होना चाहिए।

- सभी ग्रेड के ब्रांड निर्धारित मात्रा के अनुकूल ही मिले, जितना टीएफएम कहा गया उतना ही पाया। मजेदार बात तो यह रही कि सभी ब्रांड ने जितना टीएफएम निर्धारित किया था उससे अधिक ही पाया गया।

- *राल अम्ल*

मानक के अनुसार साबुन में सिर्फ 3 प्रतिशत की अधिकतम जरूरत है।

- सभी ब्रांड में 0.54–1.98 प्रतिशत तक राल अम्ल पाया गया। जो कि निर्धारित मात्रा के अनुकूल रहा।
- कास्टिक क्षार मुक्त (as NaOh) बाय मास भारतीय मानक के अनुसार 0.05 प्रतिशत अधिक से अधिक कास्टिक क्षार की मात्रा साबुन में होनी चाहिए।

टोटल फैटी मैटर (% बाय मास)			
	ब्रांड	टीएफएम का दावा (%)	टैस्ट रिज़ल्ट में पाया गया टीएफएम (%)
ग्रेड 1	मैसूर सैंडल	80	80.67
	सिंथॉल	79	80.15
	सुपिरिया सिल्क	76	76.21
	पार्क एवेन्यू	76	76.17
	गोदरेज़ नंबर1	76	76.15
	गोदरेज़ फेयर ग्लो	76	76.07
ग्रेड 2	विवेल	73	74.10
	मार्गो	71	71.14
	लक्स	70	70.10
ग्रेड 3	हमाम	68	68.05
	मेडिमिक्स	60	60.41
	लाइफबॉय	60	60.14

- सभी में ब्रांड में न्यूनतम मात्रा में ही वह भी निर्धारित मात्रा के अनुकूल ही कास्टिक क्षार की मात्रा पाई गई।

• अघुलनशील पदार्थ

भारतीय मानक के अनुसार ग्रेड1 के साबुन के लिए अधिकतम 2.5 प्रतिशत ग्रेड2 व ग्रेड3 के लिए 10 प्रतिशत अधिकतम।

- सभी ब्रांड अघुलनशील पदार्थ की अधिकतम निर्धारित मात्रा के अंतर्गत ही पाए गए।
- क्लोराइड (as NaCl) इसकी 1.50 प्रतिशत अधिकतम मात्रा हो सकती है।
- कोई भी ब्रांड निर्धारित मात्रा से अधिक नहीं पाया गया।

• कार्बोनेटेड क्षार

साबुन अमूमन हाइड्रोक्साइड और सोडियम कार्बोनेट या पोटेशियम या फिर दोनों के मिश्रण से बनता है। सोडियम सिलिकेट की मात्रा साबुन में होने से भी क्षारीयता की मात्रा आती है या फिर अन्य कई प्रकार के क्षार उपकरण कई बार साबुन में मिश्रित किए जाते हैं। अधिकतर क्षारीयता की मात्रा 'कार्बोनेटेड क्षार' के रूप में पाई जाती है।

- सभी ब्रांड में 1 प्रतिशत से कम ही कार्बोनेटेड क्षार की मात्रा पाई गई।

• नमी की मात्रा

भारतीय मानक के अनुसार नमी की मात्रा के लिए कोई निर्धारित नियम नहीं है। यह बहुत अधिक ज्यादा या बहुत अधिक कम भी नहीं होनी चाहिए।

- सुप्रिया सिल्क में सबसे कम नमी की मात्रा पाई गई इसके बाद मार्गो और हमाम में।

फ़िज़िको कैमिकल टैस्ट स्कोर

ब्रांड→ / मापदंड↓	भारांक %	गेड 1						
		मैसूर सैंडल	सिंथॉल	सुपिरिया सिल्क	गोदरेज फेयर ग्लो	पार्क एवेन्यू	गोदरेज़ नंबर1	
4.1 टीएफएम	16	14.93	14.52	11.36	11.25	11.33	11.32	
4.2 मॉइस्चर	7	6.33	5.13	7.0	5.96	5.46	4.48	
4.3 लेदर	10	10.0	8.42	8.42	8.68	9.21	7.89	
4.4 मशिनेस	6	5.61	3.83	6	4.30	3.17	4.76	
4.5 रोसिन एसिड	3	2.01	2.39	2.56	2.36	2.01	2.33	
4.6 मैटर इनसोल्यूबल	5	4.74	4.75	4.71	4.75	4.77	4.74	
4.7 फ्री कार्बोनेटेड एल्कली	5	4.52	3.97	4.5	4.07	4.47	4.65	
4.8 फ्री कास्टिक एल्कली	4	4	4	4	4	4	4	
4.9 क्लोराइड	5	4.93	4.69	4.13	4.61	4.63	3.94	

- मेडिमिक्स में सभी ब्रांड की अपेक्षा अधिक मात्रा में नमी पाई गई इसलिए इसे सबसे कम अंक दिए गए।

• झाग बनना

भारतीय मानक के अनुसार ग्रेड1 के लिए झाग 280 मि.ली., ग्रेड2 के लिए 240 मि.ली व ग्रेड3 के लिए 200 मि.ली बनना ज़रूरी होता है।

साबुन में सबसे महत्वपूर्ण झाग होता है जो कि उपभोक्ताओं को उसे इस्तेमाल करते वक्त ही दिखता है जब साबुन को पानी में गीला करने के बाद उससे नहाते हैं, हाथ धोते हैं तो उसमें से कितने झाग निकलते हैं। परीक्षण किए जाने वाले साबुन की इस क्षमता को जांचने के लिए पांच ग्राम स्क्रब और साबुन का एक टुकड़ा लेकर पानी में मिश्रित किया गया इसके बाद उसमें बनने वाले झाग को पैमाने से मापा गया।

- जिस साबुन के ब्रांड में अत्याधिक झाग बने उसे ही सर्वाधिक अंक दिए गए।

• मशिनेस यानी साबुन गलना/घुलता तो नहीं है

आपके साबुन में पानी को सोखने की कितनी क्षमता है, जब आप उसका इस्तेमाल करते हैं तो वह कितना गलता/घुलता है। यह जांच सभी ब्रांड पर की गई। सभी ब्रांड के साबुन इस जांच पर बहुत अधिक खरे नहीं उतर पाए।

- सुपिरिया सिल्क इसके बाद मैसूर सैंडल का साबुन पानी में इस्तेमाल करने पर सबसे कम घुला।
- पार्क एवेन्यू इसके बाद विवेल जांच के दौरान पानी में सबसे अधिक घुले।

• ये बताएगा कहीं आपकी त्वचा शुष्क तो नहीं

अमूमन साबुन त्वचा पर इस्तेमाल करने के बाद आपकी त्वचा को शुष्क बना देती हैं हमनें इस बार अपनी जांच में इसे भी परखा कि कौन सा साबुन आपकी त्वचा को सबसे अधिक कोमल रखता है। इसके लिए कोर्नियोमीटर का इस्तेमाल किया गया जो कि एक विज्ञानी यंत्र है। यह यंत्र आपकी त्वचा में कितनी पानी की कमी है इससे बिल्कुल स्पष्ट दर्शा देता है। हमने इसके लिए परीक्षण किए जाने वाले साबुन के ब्रांड को इस्तेमाल करने के पहले दिन एक और दो घंटे के बाद जांच की गई।

साबुन को हाथ पर लगाया गया और इसके बाद कोर्नियोमीटर पैमाने से तीन बार जांचा गया। जांच में अध्ययन करने में इसके लिए पैमाने से तीन रीडिंग ली गई थीं।

- त्वचा पर अमूमन ब्रांड के साबुन इस्तेमाल करने के बाद त्वचा शुष्क ही पाई गई। सिर्फ सुपिरिया सिल्क अन्य की अपेक्षा में कुछ बेहतर रही। इसकी तीनों रीडिंग में बहुत मामूली सा ही अंतर पाया

	गेड 2			गेड 3		
	विवेल	मार्गो	लक्स	हमाम	लाइफबॉय	मेडिमिक्स
	14.48	12.11	11.28	15.06	11.26	11.39
	6.24	6.66	5.24	6.61	4.82	2.45
	9.02	10	9.47	9.92	10.0	9.66
	3.65	4.34	3.99	4.59	4.22	4.56
	2.47	2.36	2.72	2.65	2.0	2.46
	4.75	4.80	4.78	4.74	4.78	4.76
	4.85	4.67	4.55	4.32	4.4	4.47
	4	4	4	4	4	4
	4.63	4.28	4.64	3.91	4.76	4.74

गया। इसके बाद सिंथॉल और लक्स। हालांकि जांच यह भी केंद्रित करती है कि अमूमन साबुन के इस्तेमाल से त्वचा शुष्क होती है।

संवेदी जांच

क्लीनिकल रिसर्च प्रयोगशाला में टॉयलेट सोप के ब्रांड की संवेदी जांच की व्यवस्था की गई थी जिसमें साबुन की गुणवत्ता सहित अन्य जरूरी संवेदी बिंदुओं का आकलन किया गया। इस जांच के लिए 150 महिला वॉलेंटियर को चुना गया था जिन्होंने की परीक्षण के लिए चुने साबुनों का प्रयोग किया था। वॉलेंटियर्स से विभिन्न मापदंडों से संबंधित सवाल प्रश्नावली के माध्यम से किए गए थे।

निम्न सवाल लिए गए प्रश्नावली में :

1. हाथ धोने के तुरंत बाद आपको अपने हाथों से कैसी खुशबू आई?
2. हाथ धोने के 30 मिनट बाद आपको अपने हाथों से कैसी खुशबू आई?
3. जब आपने हाथ धोए तो झाग की गुणवत्ता कैसी लगी?
4. हाथ धोने के बाद आपकी त्वचा कैसी हो गई?
5. साबुन का आकार कैसा था?
6. साबुन से नहाने के बाद त्वचा में निखार और बहुत ताज़ा महसूस करते हो?
7. क्या हाथ धोने के साबुन में ठीक से साफ़ व स्वच्छ करने की गुणवत्ता थी?
8. क्या हाथ धोने के साबुन के इस्तेमाल के बाद त्वचा में किसी प्रकार की जलन या परेशानी महसूस की?
9. साबुन की पैकिंग के लिए कितने अंक देंगे?
10. हाथ धोने के साबुन की समग्र गुणवत्ता को कितने अंक देंगे और किस आधार पर देंगे?

- समग्र संवेदी जांच के परिणाम में अधिकतर सभी ब्रांड को अच्छा और बहुत अच्छा की श्रेणी के परिणाम मिले।
- इस जांच में हमाम और सिंथॉल ब्रांड अत्याधिक पसंद किए गए ब्रांड बने।

संवेदी जांच अंक 18 में से–

ब्रांड→ / मापदंड↓	भारांक %	ग्रेड 1						
		सुपिरिया सिल्क	सिंथॉल	मैसूर सैंडल	गोदरेज़ नं. 1	गोदरेज़ फेयर ग्लो	पार्क एवेन्यू	
स्किन हाइड्रेशन / शुष्कता	8	8	7.21	5.9	4.93	4.11	3.82	

ब्रांड→ / मापदंड↓	भारांक %	ग्रेड 1						
		सिंथॉल	मैसूर सैंडल	सुपिरिया सिल्क	पार्क एवेन्यू	गोदरेज़ नं. 1	गोदरेज़ फेयर ग्लो	
संवेदी परीक्षण	18	12.26	12.09	11.96	11.91	11.84	11.50	

पैकिंग/मार्किंग/कुल वज़न

• पैकिंग : हाथ धोने के साबुन की पैकिंग इस प्रकार से होनी चाहिए

कि वह नमी और उसे किसी प्रकार से नुकसान पहुंचने से सुरक्षित रहे। इको मार्क के अनुसार उत्पाद की पैकिंग इस प्रकार से होनी चाहिए कि इस्तेमाल में आसान हो/दोबारा से इस्तेमाल करने योग्य हो/प्राकृतिक रूप से किसी प्रकार का नुकसान न हो पैकिंग में ऐसे उत्पादों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

• पार्क एवेन्यू, मेडिमिक्स, मैसूर सैंडल और विवेल को पॉली पैक और उसके गत्ते के बॉक्स में पैक किया गया था। ऐसी पैकिंग होने से साबुन वातावरण की नमी से सुरक्षित रहती है।

- बाकी सभी ब्रांड की पैकिंग लेमिनेटिड पेपर से कवर किए गए थे।

साबुन के पैकिंग पर होनी चाहिए निम्न जानकारियां

- उत्पादक का नाम
- उत्पाद के ब्रांड का नाम, यदि कोई ट्रेडमार्क हो तो
- सामग्री की श्रेणी/ग्रेड
- पैकिंग के दौरान कुल वज़न
- उत्पादन का महीना और वर्ष
- बैच नंबर/ लॉट नंबर कोड
- कुल वसा/टोटल फैटी मैटर
- अन्य कोई संघटक
- यदि हो सके तो इको मार्क, टीएफएम की गुणवत्ता और पानी में घुलने की क्षमता

	ग्रेड 2			ग्रेड 3		
	लक्स	विवेल	मार्गो	लाइफबॉय	हमाम	मेडीमिक्स
	6.78	5.42	5.23	5.36	4.65	3.5

	ग्रेड 2			ग्रेड 3		
	मार्गो	लक्स	विवेल	हमाम	मेडीमिक्स	लाइफबॉय
	12.03	11.94	11.67	12.36	11.90	11.8

- एमआरपी
- यदि जरूरी है तो मानक चिन्ह

सभी ब्रांड ने विभिन्न जानकारी दी हुई थीं सिर्फ मेडिमिक्स और मैसूर सैंडल ने साबुन का ग्रेड नहीं दिया हुआ था।

इसके लिए साबुन को उनके द्वारा निर्धारित मात्राओं और जरूरी नियमों पर परखा गयया कि वे उन्हें पूरा करते हैं या नहीं। पैकिंग अधिनियम 2011 के अनुसार 100 ग्राम वज़न वाले साबुन में न्यूनतम 4.5 ग्राम तक साबुन की कम मात्रा हो सकती है उससे अधिक मानक के विपरीत है।

- हमाम और सुपिरिया सिल्क साबुन के ब्रांड में निर्धारित कुल वज़न से 9.46 ग्राम 8.02 ग्राम वज़न कम पाया गया। यह मात्रा मानक से बहुत ज्यादा थी। इसलिए इन्हें कम से कम अंक दिए गए। सिर्फ सिंथॉल ब्रांड का साबुन निर्धारित कुल वज़न से अधिक पाया गया।

साबुन से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण बातें

हममें से ज्यादातर लोग नहाने का साबुन चुनते वक्त और इसके इस्तेमाल के वक्त इस बात पर ध्यान नहीं देते कि उसका हमारी त्वचा पर क्या प्रभाव पड़ सकता है इसलिए यह जान लेना बेहद जरूरी है कि हमारा साबुन कैसा होना चाहिए।

सामान्य तौर पर साबुन लवणीय होता है, जो कि वेजिटेबल ऑयल के साथ–साथ सोडियम हाइड्रोक्साइड या पोटेशियम हाइड्रोक्साइड से मिलकर बना होता है। ये लवणीय या क्षारीय होते हैं, जिनमें पी. एच. वैल्यू (हमारे शरीर में उपस्थित लवण एवं क्षार की मात्रा को बताने का एक पैमाना है) की मात्रा लगभग 9–10 के आसपास होती है। वहीं हमारी त्वचा की पी. एच. वैल्यू की मात्रा 5.6 से 5.8 के आसपास होती है। साबुन का लगातार इस्तेमाल करने से हमारी त्वचा की पी.एच. वैल्यू की मात्रा बढ़ जाती है, जो त्वचा के लिए खतरनाक हो सकता है।

रूखी त्वचा की समस्या

सबसे आम समस्या होती है ऑयली और ड्राई त्वचा वालो में। रूखी–सूखी त्वचा के लिए ज्यादातर साबुन जिम्मेदार होते हैं, इसलिए ये त्वचा के लिए ठीक नहीं होते। जिनकी त्वचा तैलीय होती है, वे अपना चेहरा दिनभर में कई बार धोते हैं, जिससे उनकी त्वचा और भी तैलीय हो जाती है। साबुन त्वचा की नमी और तेल का संतुलन बदल सकते हैं, इसलिए ये आपकी त्वचा को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

साबुन में मौजूद रसायन

सर्फेक्टेन्टः सर्फेक्टेन्ट एक प्रकार का केमिकल होता है, जो पानी और साबुन का मिश्रण होता है। यह गंदगी दूर करने का काम करता है। इससे त्वचा पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ सकता है।

डिटर्जेंटः डिटर्जेंट सिंथेटिक मेटेरियल्स के बने होते हैं और त्वचा की नमी को चुरा लेते हैं।

ग्लिसरीनः ग्लिसरीन युक्त साबुन खासकर रूखे मौसम के लिए अच्छा होता है। यह आपकी त्वचा की नमी को बरकरार रखने के साथ–साथ उसे मुलायम बनाने का काम भी करता है। यह उन लोगों के लिए काफी फायदेमंद है, जिनकी त्वचा बेहद रूखी होती है।

इन बातों पर भी ध्यान दें

•आप उसी साबुन का प्रयोग करें, जो आपकी त्वचा के लिए उपयुक्त हो। •बार–बार साबुन लगाने या फिर दूसरे का साबुन इस्तेमाल करने से बचना चाहिए। •ग्लिसरीन और मिल्क युक्त साबुन का इस्तेमाल करना चाहिए। •साबुन का प्रयोग करने के बाद उसे धोकर रखना चाहिए, जिससे कि आप जब उसका इस्तेमाल दोबारा करें तो उसमें किसी प्रकार की गंदगी न जमी हो। •नहाने वाले साबुन को कपड़ा धोने वाले साबुन के साथ मिक्स नहीं करना चाहिए। अक्सर हम घरों में देखते हैं कि लोग इन दोनों साबुनों को एक साथ ऊपर–नीचे रख देते हैं।